"अशोकनगर का इतिहास"

अशोकनगर का इतिहास प्राचीन भारतीय महाकाव्यों से लेकर स्कैंडिया राजवंश तक फैला हुआ है। इसका अपना जिला 2003 वर्तमान अशोकनगर जिले का क्षेत्र महाभारत काल में शिशुपाल के चेदि साम्राज्य और जनपद काल में चेदि जनपद का हिस्सा था। मध्यकाल में चंदेरी राज्य का हिस्सा था। छठी शताब्दी ई.पू. में चंदेरी क्षेत्र (अशोकनगर जिले का क्षेत्र) अवंती, दशार्ण और चेदि जनपदों के अंतर्गत था। यह नंद, मौर्य, शुंग और मगध साम्राज्य का हिस्सा था। ऐसा माना जाता है कि महान सम्राट अशोक ने उज्जैन पर विजय प्राप्त करने के लिए अपनी यात्रा के दौरान अशोकनगर में एक रात बिताई थी, इसलिए इस क्षेत्र का नाम अशोकनगर रखा गया। मगध के बाद इस पर नाग वंश के शुंगों और शकों ने शासन किया। इसके बाद, गुप्तों और मौखरियों के बाद, यह हर्षवर्द्धन के साम्राज्य का हिस्सा बना। 8 वीं-9 वीं शताब्दी ई. में. यह प्रतिहार राजपूत वंश के अधीन आ गया। प्रतिहार वंश के 7 वें वंशज राजा कीर्तिपाल ने 10 वीं-11 वीं शताब्दी में चंदेरी शहर की स्थापना की थी। और इसे अपनी राजधानी बनाया। प्रतिहार वंश के पतन के बाद जेजाक भक्ति के चंदेलों ने भी यहां कुछ समय तक शासन किया। 11 वीं शताब्दी ई. में महमूद गजनवी के बार-बार आक्रमणों से चंदेरी साम्राज्य भी प्रभावित हुआ। दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद इस पर तुर्कों, अफगानों और मुगलों का शासन रहा। चंदेरी के बुंदेला शासक मोरप्रहलाद के शासनकाल के दौरान, ग्वालियर के शासक दौलतराव सिंधिया ने अपने सेनापति जॉन बैप्टिस्ट को चंदेरी पर हमला करने के लिए भेजा। उसने चंदेरी और ईसागढ़ तथा आसपास के इलाकों पर भी कब्ज़ा कर लिया। चंदेरी के अंतिम बुंदेला शासक राजा मर्दन सिंह ने 1857-58 ई. में स्वतंत्रता सेनानी के रूप में सर्वोच्च बलिदान दिया।

"मुंगावली का इतिहास"

मुंगावली मध्य प्रदेश के अशोकनगर जिले का ऐतिहासिक शहर है। बेतवा नदी के पास स्थित है। मूलतः मध्यकालीन चंदेरी राज्य का एक भाग। मुंगावली का इतिहास प्राचीन साम्राज्य, मौर्य, गुप्त और बुंदेला राजपूतों से जुड़ा है, जिन्होंने पड़ोसी चंदेरी क्षेत्र पर शासन किया था। 1928-1950 में मुंगावली की देखरेख चंद कालरा के रूप में की गई।

"चंदेरी का इतिहास"

चंदेरी मध्य प्रदेश का एक ऐतिहासिक शहर है। इसके रणनीतिक स्थान के लिए नवीनीकृत किया गया है। एक प्राचीन व्यापार, मार्ग और इसकी उत्कृष्ट हथकरघा पोशाक, यह राजपूत, सल्तनत और मुगल शासन के माध्यम से परिवर्तित हुई। चंदेरी को एक सरकार (प्रशासनिक जिला) बना दिया गया और यह कपड़ा उत्पादन का एक समृद्ध केंद्र बन गया। विशेषकर चंदेरी क्षेत्र को शिशुपाल द्वारा मुख्य भूमि के रूप में जाना जाता था।

"ईसागढ़ का इतिहास"

ईसागढ़ मध्य प्रदेश के अशोकनगर जिले का एक ऐतिहासिक शहर है। मूल रूप से इसे अहीरों के अधीन "ओन्डिला" कहा जाता था, इसे 1808 में राजा दुर्जन लाल खिची ने जीत लिया और इसका नाम बदलकर "बहादुरगढ़" कर दिया गया। 1811 में, सिंधिया जनरल जीन बैप्टिस्ट फिलोज़ ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया और इसका नाम बदलकर ईसागढ़ रख दिया, जिसका अर्थ है "यीशु का किला"। 1811 में जॉन बैप्टिस्ट (जीन डी फिलोज़) की कमान के तहत इस शहर पर सिंधिया सेना ने कब्ज़ा कर लिया था। उन्होंने ईसागढ़ को एक प्रशासनिक मुख्यालय के रूप में स्थापित किया और मोती महल और सगुर महल सहित स्थानीय महलों का निर्माण किया। दौलत राव सिंधिया के शासन में, इसका उपयोग सिक्के ढालने के लिए स्थानीय टकसाल के रूप में भी किया जाता था।